कक्षा
11

आजादी के बाद का स्वर्णिम भारत

भाग–1

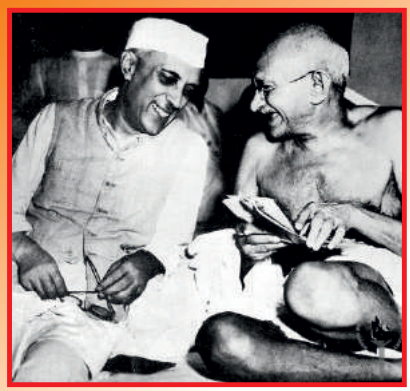

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

आजादी के बाद का स्वर्णिम भारत

भाग–1

कक्षा 11

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

आजादी के बाद का स्वर्णिम भारत (भाग–1)

कक्षा 11

संयोजक

प्रोफेसर बी. एम. शर्मा
पूर्व अध्यक्ष
राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

लेखकगण

डॉ. आशिष व्यास
सहायक आचार्य, इतिहास
उपायुक्त, मिडडे–मील, जयपुर

डॉ. सुनीता पालावत
सह आचार्य, अर्थशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय,
जयपुर–302001

डॉ. ओम महला
सह आचार्य, लोक प्रशासन
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर–302004

प्राक्कथन

बीसवीं सदी भारत के महान स्वतन्त्रता संग्राम की सदी थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर, मौलाना अबुल कलाम आजाद जैसे भारत माँ के महान सपूतों और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस एवं भगतसिंह जैसे उत्कट देशभक्त क्रांतिकारियों ने अपने अप्रतिम योगदान से देश को आजादी दिलाई। महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय आन्दोलन को जन सामान्य का आन्दोलन बनाकर उसे व्यापक स्वरूप प्रदान किया। आन्दोलन को सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, सर्वोदय तथा नैतिक बल जैसे सशक्त सिद्धान्तों से शक्ति मिली। गांधीजी ने 'असहयोग', 'सविनय अवज्ञा' एवं 'भारत छोड़ो' जैसे अहिंसक आन्दोलनों से ब्रिटिश शासन की चूलें हिलाकर देश को सत्य एवं अहिंसा के बल पर बिना किसी रक्तपात के आजादी दिलाने में अहम् भूमिका निभायी। गांधीजी के इसी शस्त्र का प्रयोग कर विश्व के अधिकांश राष्ट्रों ने विदेशी शासकों से आजादी प्राप्त की। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रमुख विशेषता यह रही है कि हमारे यहां राष्ट्रीय आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास दोनों घटनाएँ साथ–साथ चलती हैं। इसी स्वाधीनता संग्राम के दौरान हमारे सांस्कृतिक जीवन मूल्यों, आदर्शों और सिद्धान्तों के अनुरूप देश में लोकतंत्र की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ। महान विचारकों और क्रांतिकारियों द्वारा रोपित लोकतन्त्र का वह पुष्प आज वटवृक्ष का रूप ले चुका है।

महान नेताओं की सूझबूझ और सर्व धर्म समभाव के सिद्धान्त को आत्मसात करते हुए देश में एक ऐसे संविधान का निर्माण किया गया जो इन सात दशकों में अनेक झंझावातों के बावजूद एकता और अखंडता का प्रमुख आधार स्तम्भ बना हुआ है। इसी कारण भारत विश्व के अन्य लोकतान्त्रिक देशों में पंडित नेहरु के बाद लाल बहादुर शास्त्री, इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी ने लोकतान्त्रिक मूल्यों और सिद्धान्तों को आगे बढ़ाते हुए अपने प्राणों की आहुति देकर भी देश को विकास के पथ पर अग्रसर किया।

जवाहरलाल नेहरू आधुनिक भारत के शिल्पी थे। वे एक महान लोकतंत्रवादी थे। लोकतंत्र के विषय में नेहरू की धारणा बड़ी गतिशील तथा व्यापक थी। वे लोकतंत्र को निरन्तर विकासमान तथा गत्यात्मक मानते थे। पं. नेहरू की संसदीय लोकतंत्र में महती आस्था थी। उनके लिए लोकतंत्र एक जीवन पद्धति है तथा सोचने का ढंग है। नेहरू द्वारा प्रतिपादित लोकतांत्रिक मूल्यों को भारतीय संविधान की प्रस्तावना में देखा जा सकता है। वस्तुतः लोकतंत्र कतिपय मूल्यों, मान्यताओं तथा नैतिक मानदण्डों का पुंज है। पंथ निरपेक्षता लोकतंत्र का मेरुदण्ड है।

आधुनिक भारत के शिल्पकार के रूप में नेहरू ने त्वरित औद्योगिक, वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय

विकास की सुदृढ़ बुनियाद रखी। उन्होंने भारत में स्थापित उद्योगों तथा बांधों को राष्ट्र के प्रमुख तीर्थ स्थल कहकर सम्बोधित किया। वे महिलाओं, बच्चों, दलितों, शोषितों, वंचितों, अल्पसंख्यकों, गरीबों तथा कमज़ोर वर्गों के सशक्तीकरण के प्रबल हिमायती थे।

सन् 1947 से सन् 1964 के अपने प्रधानमंत्रित्व काल में नेहरू ने लोकतांत्रिक संस्थाओं का निर्माण कर एक अभूतपूर्व युग का सूत्रपात किया। उन्होंने चुनाव–प्रक्रिया, न्यायिक स्वतंत्रता, योजनाबद्ध आर्थिक विकास और वैज्ञानिक संस्थाओं, आई.आईटी, आई.आई.एम., एम्स जैसी संस्थाओं के निर्माण का जाल फैलाकर देश में चहुँमुखी विकास का श्रीगणेश कर देश को नवनिर्माण एवं विकास के शिखर पर पहुँचाने का प्रयास किया। वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में हरित एवं श्वेत क्रान्तियां पैदा की तथा इसरो तथा परमाणु ऊर्जा केन्द्र की स्थापना कर एक गौरवशाली अध्याय की शुरूआत की।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की वैचारिकी के जिन बुनियादी सिद्धान्तों को नेहरू के नेतृत्व में स्वतंत्र भारत के संवैधानिक लोकतंत्र के आधारभूत सैद्धान्तिक स्तम्भों के रूप में मान्यता मिली उनमें प्रमुख हैं राष्ट्रवाद, विकेंद्रीकरण, समाजवाद तथा पंथ निरपेक्षता। इनके बिना लोकतंत्र की अवधारणा अधूरी है। लोकतांत्रिक समाजवाद उनके विचार दर्शन का मूल मर्म है। लोक कल्याणकारी शासन, सामुदायिक विकास, पंचायती राज, विकेन्द्रीकरण, राष्ट्रीयकरण, नियोजित विकास तथा राष्ट्रीय विकास में निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों की समान रूप से भागीदारी के साथ मिश्रित अर्थ–व्यवस्था आदि उनके आर्थिक लोकतंत्र के उपक्रम कहे जा सकते हैं।

नेहरू के लिए राष्ट्रवाद का अर्थ केवल भारत की स्वतंत्रता ही नहीं था वरन विश्व मानवता की सेवा भी था। वे उदार राष्ट्रवादी थे और एशियाई तथा अफ्रीकी जनता की राजनीतिक तथा आर्थिक स्वतंत्रता की आकांक्षा के प्रमुख वक्ता थे। इस प्रकार एक महान् राष्ट्रवादी होने के साथ–साथ नेहरु महान अन्तरराष्ट्रवादी भी थे। भारत की विदेश नीति के भी नेहरू प्रमुख शिल्पी थे। असंलग्नता एवं पंचशील उनकी भारतीय विदेश नीति की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत पुस्तक में राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ संवैधानिक विकास की यात्रा का संक्षिप्त, सरल, सुगम एवं सुबोध विश्लेषण किया गया है जिससे विद्यार्थी उसे आसानी से हृदयंगम कर सकें। साथ ही पुस्तक में महात्मा गांधी तथा पं. नेहरू के राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान तथा नेहरू की वैचारिक विरासत, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा सुनियोजित विकास के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित कर उनकी सशक्त भारत के निर्माण में भूमिका की व्याख्या की गयी है। आशा है, प्रस्तुत पुस्तक विद्यार्थी जगत के लिए स्वतंत्रता संग्राम, संवैधानिक विकास तथा राष्ट्र निर्माण एवं विकास में नेहरू की भूमिका को सम्यक प्रकार से समझने में अति सहायक सिद्ध होगी।

संयोजक

प्रोफेसर बी. एम. शर्मा

पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

आजादी के बाद का स्वर्णिम भारत

भाग–1

विषय कोड–79
पूर्णांक–100

अध्याय–1 : औपनिवेशिक भारत–सतत शोषण का काल **11**

धन का निकास, नौरोजी के अनुसार धन निष्कासन की पद्धतियां, धन निकासी का आर्थिक प्रभाव, ब्रिटिश काल में भारतीय परम्परागत उद्योगों का पतन, ब्रिटिश काल से पूर्व भारत में विभिन्न प्रकार के उद्योग, ब्रिटिश काल में कृषि पर प्रभाव, ब्रिटिश काल में हस्तशिल्प कलाओं का पतन

अध्याय–2 : भारत का स्वतंत्रता आंदोलन **37**

राष्ट्रीय आन्दोलन–उद्भव एवं विकास के उत्तरदायी कारण, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से पूर्व राजनीतिक संस्थाओं का उदय, राष्ट्रीय आंदोलन के चरण–1. राष्ट्रीय आंदोलन का उदारवादी युग–कांग्रेस के प्रारम्भिक उद्देश्य, ब्रिटिश सरकार और कांग्रेस, उदारवादियों की सफलता, 2. राष्ट्रीय आंदोलन का उग्रवादी युग–क्रांतिकारी आंदोलन का प्रथम चरण, क्रान्तिकारी आन्दोलन का दूसरा चरण, 3. राष्ट्रीय आंदोलन का गाँधी युग–राष्ट्रीय आन्दोलन का आगामी घटनाक्रम, भारत छोड़ो आन्दोलन, भारत छोड़ो आंदोलन के कारण, आजाद हिंद फौज, नौसैनिकों का विद्रोह, महात्मा गाँधी के विचार

अध्याय–3 : भारत में संवैधानिक विकास की प्रक्रिया **17**

सन 1773 ई. का रेग्यूलेटिंग एक्ट, 1781 का संशोधन अधिनियम, सन 1784 का पिट्स इंडिया एक्ट, सन 1786 का संशोधन अधिनियम, सन 1793 का चार्टर एक्ट, सन 1813 ई. का चार्टर एक्ट, सन 1833 ई. का चार्टर एक्ट, सन 1853 ई. का चार्टर एक्ट, सन 1858 ई. का भारत सरकार अधिनियम, सन 1861 ई. का भारतीय परिषद अधिनियम, सन 1892 ई. का भारतीय परिषद अधिनियम, सन 1909 ई. का भारतीय परिषद अधिनियम (मॉर्ले मिन्टो सुधार), सन 1919 ई. का भारत सरकार अधिनियम (मोंटेग्यू–चेम्सफोर्ड सुधार), साइमन कमीशन 1927, सन 1935 ई. का भारत सरकार अधिनियम, भारतीय स्वतंत्रता अधिनिमय 1947, संविधान सभा का गठन, संविधान सभा के प्रमुख सदस्य : प्रमुख संविधान निर्माता, संविधान निर्माण की प्रक्रिया,

अध्याय–4 : नेहरू की वैचारिक विरासत एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण **17**

वैज्ञानिक दृष्टिकोण, परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम, अंतरिक्ष अनुसंधान, लोकतंत्र सम्बन्धी विचार, नेहरु की आर्थिक दृष्टि : लोकतांत्रिक समाजवाद, पंथनिरपेक्षता सम्बंधी विचार, राष्ट्रवाद सम्बन्धी विचार, नेहरू का अन्तर्राष्ट्रीयवाद, असंलग्नता, पंचशील,

अध्याय–5 : सुनियोजित विकास एवं सशक्त भारत के निर्माण की आधारशिला : नेहरू की भूमिका **18**

आर्थिक नियोजन सम्बन्धी विचार एवं योजना आयोग का गठन, प्रथम पंचवर्षीय योजना, द्वितीय पंचवर्षीय योजना, तृतीय पंचवर्षीय योजना,

विषय–सूची

अध्याय –1	**औपनिवेशिक भारत – सतत शोषण का काल**	**1–9**
	– धन का निकास	
	– ब्रिटिश काल में कृषि पर प्रभाव	
	– ब्रिटिश काल में हस्तशिल्प कलाओं का पतन	
अध्याय –2	**भारत का स्वतन्त्रता आन्दोलन**	**10–40**
	– राष्ट्रीय आन्दोलन का उदारवादी चरण (सन् 1985 से 1905)	
	– राष्ट्रीय आन्दोलन का उग्रवादी चरण (सन् 1905 से 1920)	
	– राष्ट्रीय आन्दोलन का गांधी युग (सन् 1920 से 1947)	
	– महात्मा गांधी के विचार	
	ईश्वर, सत्य एवं अहिंसा, स्वदेशी, सर्वोदय, चरखा, ट्रस्टीशिप, सत्याग्रह एवं शासन का विकेन्द्रीकरण	
अध्याय –3	**भारत में संवैधानिक विकास की प्रक्रिया**	**41–54**
	– संवैधानिक विकास	
	– संविधान निर्माण की प्रक्रिया	
अध्याय –4	**नेहरू की वैचारिक विरासत एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण**	**55–68**
	– वैज्ञानिक दृष्टिकोण, परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम, अन्तरिक्ष अनुसंधान	
	– लोकतन्त्र संबंधी विचार	
	– लोकतान्त्रिक समाजवाद	
	– पंथ निरपेक्षता संबंधी विचार	
	– राष्ट्रवाद संबंधी विचार	
	– नेहरू का अन्तर्राष्ट्रीयवाद	
	– असंलग्नता	
अध्याय–5	**सुनियोजित विकास एवं सशक्त भारत के निर्माण की आधारशिला : नेहरू की भूमिका**	**69–83**
	– आर्थिक नियोजन संबंधी विचार एवं योजना आयोग का गठन	
	– प्रथम पंचवर्षीय योजना (सन 1951 से 1956)	
	– द्वितीय पंचवर्षीय योजना (सन 1956 से 1961)	
	– तृतीय पंचवर्षीय योजना (सन 1961 से 1966)	
	संदर्भ ग्रंथ सूची	**84**